कानों में कंगना

(राधिकारमण प्रसाद सिंह)

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

▷ 'कानों में कंगना' कहानी का सारांश :—

* 'कानों में कंगना' राधिकारमण प्रसाद सिंह रचित प्रसिद्ध कहानी है। भारतीय मूल्यों को आधार बनाकर उन्होंने मानवीय-संबंधों के बदलते स्वरूप का चित्रण किया है। हमारी संस्कृति में गृहस्थ-जीवन को बहुत महत्व दिया गया है। आलोच्य कहानी की पृष्ठभूमि भी नारी और पुरुष के गुणों-अवगुणों पर निर्मित दाम्पत्य-संबंध है। इस संबंध को निभाने में नारी और पुरुष-दोनों की अपनी-अपनी भूमिका होती है। यदि कोई एक भी अपने कर्तव्यों या जिम्मेदारियों का निर्वहन न करे, तो रिश्ते की डोर को बाँधे रखना मुश्किल हो जाता है। पति-पत्नी

का आपसी सामंजस्य ही इस रिश्ते की पहचान है। इस कहानी में यह भी देखने को मिलता है कि व्यक्ति की विचारधारा, उसका व्यवहार - किस प्रकार उसके संबंधों को प्रभावित करता है। प्रायः यही धारणा होती है कि किसी भी व्यक्ति का व्यवहार या उसके कार्य केवल उसी के वैयक्तिक जीवन पर प्रभाव डालते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। वह स्वयं से जुड़े आत्मीय तथा निकटतम लोगों को भी प्रभावित करता है। इसका उदाहरण है - नरेन्द्र। उसने जो भी निर्णय लिया, वह केवल स्वयं को ध्यान रखकर लिया, परन्तु उसके कार्यों का प्रभाव किरन पर स्पष्ट देखने को मिलता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज का ताना-बाना व्यक्ति के अंतःसंबंधों पर ही निर्मित है, तो यह संभव ही नहीं है कि किसी एक का कर्म किसी दूसरे से अछूता रह जाएगा। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वह किसी-न-किसी को अवश्य प्रभावित करता है, और दाम्पत्य-जीवन

का तो आधार ही पति-पत्नी का सामंजस्य है। जिस रिश्ते में नरेन्द्र की प्राथमिकता किरन और उसकी भावनाएँ होनी चाहिए थीं, वहीं उसने किरन की उपेक्षा कर दी।

कथानक का आरंभ नरेन्द्र और किरन के संवाद से होता है, जहाँ वह किरन से उसके कानों के आभूषण के बारे में प्रश्न करता है। किरन का उत्तर सुनकर वह विस्मित रह जाता है और उसके मन में किरन के प्रति पुरुषोचित आकर्षण उत्पन्न होता है। अगले दिन वह फिर योगीश्वर से मिलने आता है। उसे देखते ही योगीश्वर किरन का हाथ नरेन्द्र के हाथों में देकर वहाँ से चले जाते हैं। तदुपरान्त दोनों ने विवाह कर लिया।

— क्रमशः